1857 की क्रान्ति का ब्रिटिशकालीन भारत पर प्रभाव : एक ऐतिहासिक अध्ययन

संगीता यादव

1857 का संग्राम ब्रिटिश शासन के खिलाफ एक बड़ी और अहम घटना थी।1857 के आते–आते भारत के आवाम का सब्र टूटने लगा। लगातार वर्षों से पल रहा असंतोष अन्त में पूरे देश में सशस्त्र महाविद्रोह के रूप में फूट पड़ा। इस क्रान्तिकारी युद्ध ने अंग्रेजी हुकुमत को हिलाकर रख दिया। 5 सितम्बर 1857 को अर्नेस्ट जोन्स ने लिखा कि हिन्दुस्तान के विद्रोह के बारे में सारे देश में एक ही राय होनी चाहिए। विश्व में जितने भी विद्रोह हुए, उनमें सबसे ज्यादा न्यायपूर्ण, भद्र और आवश्यक विद्रोह है। यह भारत पर अधिकार करने वाले अंग्रेजों के खिलाफ राष्ट्रीय घोषणा, धार्मिक उग्रता और सैनिकों की शिकायत का संयुक्त रूप था। देशी राजा नवाब और देशी सिपाही इसमें शामिल हुए थे। मुसलमान और हिन्दुओं ने अपनी पुरानी धार्मिक घृणा भूलकर ईसाइयों के खिलाफ हाथ मिलाया था। घृणा और आतंक उस महान विद्रोही आन्दोलन के प्रेरक थे।